

चलीं आई मैया, ओ रेवा मैया.

बना बनाकर तीर ॥२॥

अमरकंठ से आई मैया-पार लगावे सबकी मैया
स्वच्छ वस्त्र और भूरा मगर है-लागे सुन्दर चीर^{sss} चीर

चलीं आई-----

शीघ्र-मुकुट गले मोतिन माला-हाथ कलश शिखिंग उर-
कितनी कोमल भावना ^{माला} की-

भर आये मेरे नीर ^{sss} नीर- चलीं आई-----

जहाँ-जहाँ से गई है मैया, बन गये तीरथ न्यारे
कितने सुन्दर और मनभावन, लगते सबको प्यारे
भक्ति भाव से सब स्वीकारें

दूध-दही क्या खीर ^{sss} खीर- चलीं आई-----

इनके दरस से पाप जो कस्ते, ^{कितने} ऋषि-मुनि इनको रटते
इनकी शरण में-पहुँच लू प्राणी

निर्मल होत शरीर ^{sss} - - - चलीं आई-----

जगजननी-जगताणी मैया-पार भँवर से हो मेरी मैया
अनब्याही पर-चाहे सभी को.

अब "श्रीबाबाश्री" घर-धीर ^{sss} धीर

चलीं आई-----